



नरेंद्र मोदी की जीत और हिन्दी समाचार पत्र

रजनीश कुमार झा

शोधार्थी, मेवाड़ विश्वविद्यालय, चित्तौड़गढ़, राजस्थान

सारांश - लोकसभा चुनाव में नरेंद्र मोदी, बीजेपी और एनडीए को मिली शानदार जीत को हिंदी समाचार पत्रों ने भी प्रमुखता से छापा है...प्रसिद्ध समाचार पत्र नवभारत टाइम्स ने अपने मुख्य पन्ने के अलावा एक अलग से मेन कवर पेज बनाया है जिस पर नरेंद्र मोदी की तस्वीर के साथ लिखा है..अबकी बार चमत्कार,,साथ ही समर्थकों का जश्न मनाते फोटो भी प्रकाशित किया है...इस पृष्ठ पर पत्र लिखता है कि - सिर्फ एक शब्द है चमत्कार, जो दुनिया की इस सबसे बड़े डिमोक्रेसी की सोलहवीं लोकसभा के नतीजों के बारे में कहा जा सकता है।और इसके पीछे जो जादूगर खड़ा है उसका मुकाबला किसी भी दूसरे लीडर से करन मुश्किल है। भारत के करोड़ों लोगों को तरक्की , बेहतरी और खुशहाली का ऐसा सपना पहले कोई नहीं दिखा पाया । नरेंद्र दामोदरदास मोदी का जादू सियासत की हर हदबंदी के पार चला गया । पत्र लिखता है कि भारत को अब अपनी तकदीर बदलने का इंतजार है और मोदी के साथ उम्मीदों का यह सफर आज से हकीकत की मुश्किल जमीन पर शुरू होता है ।

प्रस्तावना-

नवभारत टाइम्स ने अपने दूसरे मुख्यपृष्ठ पर छह कॉलम के साथ लिखा है..' मोदी ने खिलाया नया कमल' नवभारत टाइम्स लिखता है कि ' भारत बदल गया है। वोटिंग मशीनों से निकली आवाजों ने आसमान पर यह इबारत लिख दी है...1984 के 30 साल बाद उसने पहली बार एक पार्टी को बिना किसी शक पूरा बहुमत सौंप दिया है क्योंकि अब उसे बर्दाश्त नहीं की गठबंधन की मजबूरी का बहाना बनाकर सरकार काम करना बंद कर दे। भारत ने 1972 के पूरे 42 साल बाद तरक्की और खुशहाली के नाम पर वोट दिया है...क्योंकि इक्कीसवीं सदी का युवा भारत कुशासन से पैदा हुई बदहाली में जीने से इंकार कर चुका है...नवभारत टाइम्स का मानना है कि इन नतीजों को भारतीय राजनीति में एक सुनामी से कम नहीं देखा जा सकता है □

नवभारत टाइम्स ने इन खबरों के अलावा एक आलेख छापा है... इसलिए चुना है देश ने आपको □ इस आलेख के जरिए पत्र ने बताया है कि अच्छे दिन आएंगे ऐसे, इसके अलावा नवभारत टाइम्स ने एक पूरे पेज पर ...ये है मेरी कहानी औप मेरा सफर ...सिफर से शिखर तक प्रकाशित किया है..जिसमें मोदी के आगे बढ़ने की कहानी और उनके पुराने चित्रों को छापा है ...पत्र ने मोदी के सेनानायकों अमित शाह और राजनाथ सिंह का भी जिक्र किया है...साथ ही मोदी की कोर टीम में कौन-कौन था ..इसको लेकर भी पाँच कॉलम का एक लेख प्रकाशित किया है...

अपने संपादकीय में नवभारत टाइम्स स्थिरता की वापसी शीर्षक से लिखता है कि अब गठबंधन की मजबूरियों का दौर खत्म हो गया है...संपादकीय में नवभारत टाइम्स लिखता है कि आम चुनाव के नतीजों से साफ है कि जनता एक मजबूत और टिकाऊ सरकार भाजपा चाहती है । उसने एक ऐसे नेता क प्रति समर्थन व्यक्त किया है जो अपने नजरिए को लेकर स्पष्ट हैऔर जिसका व्यक्तित्व उम्मीदें जगाता है। दरअसल इन तीन दशक में एक ऐसी पीढ़ी आई है जिसने

केंद्र सरकार मतलब ही कमजोर, मजबूर, दूसरों पर आश्रित गवर्नमेंट हो गया था। पत्र अपने संपादकीय के आखिरी में लिखता है कि उम्मीद की जानी चाहिए कि जनता का जो जबर्दस्त भरोसा, जो अपार विश्वास मोदी को हासिल हुआ है, उसकी ताकत के बल पर वह तमाम आशंकाओं को गलत साबित करेंगे और देश को खाई-खंदकों से बचाते हुए विकास की चोटी पर ले जाएंगे।

अपने आर्थिक पेज पर नवभारत टाइम्स ने लिखा है कि मोदी की जबर्दस्त जीत को मार्केट ने सलामी दी है... साथ ही इस पृष्ठ पर पत्र ने तीन कॉलम में कारोबारियों की पसंद कैसे बने मोदी?, और रिजल्ट्स के साथ एक नए दौर में प्रवेश कर



रहा इंडिया □ विश्लेषण भी छापा है

अब अगर बात एक और प्रसिद्ध अखबार नई दुनिया की बात करें तो इस समाचार पत्र ने मोदी और उनकी मां की तस्वीर को प्रमुखता से अपने पहले और स्पेशल पेज पर प्रकाशित किया है और लिखा है कि -अच्छे दिन आए...30 साल बाद किसी एक पार्टी को स्पष्ट बहुमत...साथ में इस खास पेज पर लोकसभा में विभिन्न पार्टियों की टैली को भी प्रकाशित किया है...पत्र के संपादक श्रवण गर्ग ने इसी खास पेज पर अपना विशेष संपादकीय भी लिखा है -कि शुक्रवार 16 मई 2014 का दिन ऐतिहासिक बन गया है...देश में राजनीति की अब एक नई इबारत लिखी जाने वाली है...इस इबारत के शिल्पी नरेंद्र मोदी होंगे। अपने विशेष संपादकीय में श्रवण गर्ग लिखते हैं कि □ चुनाव प्रचार के दौरान इतने 'जहर' का आदान-प्रदान हो चुका है कि एक 'सहनशील' सरकार और एक 'सहयोगात्मक' विपक्ष की संभावनाएं निरस्त सी नजर आती हैं। पर यह सिद्ध करने के लिए कोई भी वैमनस्य स्थायी नहीं होता, उम्मीद की जा सकती है कि मोदी एक सशक्त विपक्ष की संसद और देश दोनों ही में उपस्थिति को प्रोत्साहित करते रहना चाहेंगे और साथ ही अपनी स्वयं की पार्टी के भीतर भी आंतरिक लोकतंत्र और असहमति की गुंजाइश बनाए रखेंगे। दोनों ही अपेक्षाएं उनके प्रचारित स्वभाव के खिलाफ मानी जा सकती हैं पर भावी प्रधानमंत्री से ज्यादा कोई और गांधीनगर और दिल्ली की जरूरतों के बीच के फर्क को नहीं समझ सकता। इस विराट विजय के लिए मोदी का अभिनंदन किया जाना चाहिए।

पत्र ने अपने विशेष पेज के दूसरे पृष्ठ पर 'दिल्ली के दिल पर भाजपा राज' नाम से खबर प्रकाशित किया है...इस पूरे पृष्ठ पर दिल्ली का चुनावी नतीजों का जिक्र किया गया है...पत्र ने अपने दूसरे मुख्यपृष्ठ पर लिखा है 'अद्भुत...अभूतपूर्व मोदी' इस शीर्षक से पत्र ने लिखा है कि 'मोदी वाकई अद्भूत हैं...करिश्माई हैं। भाजपा को उम्मीद से बड़ी जीत दिलाने वाले मोदी ने दशकों से चला आ रहा खंडित जनादेश का सिलसिला तोड़ा है। भाजपा को अपने दम पर बहुमत दिलाकर यह मिथक को भी तोड़ा कि जमाना अब गठबंधन का ही रहा। कांग्रेस मुक्त भारत का नारा देकर ऐसी लहर पैदा की कि 7 राज्यों में कांग्रेस साफ ही हो गई।

इसी पृष्ठ पर नई दुनिया ने पहली-पहली बार हुआ है...शीर्षक से एक और रिपोर्ट प्रकाशित किया है ...जिसमें मोदी के वड़ोदरा में जीत के बाद दिए गए भाषण का उल्लेख है...साथ ही नई दुनिया अपने एंकर स्टोरी में लिखा है कि किस तरह मोदी की जीत को सेंसेक्स ने सलामी दी है...इसके अलावा इस पृष्ठ पर हर राज्य का परिणाम भी प्रकाशित किया है...नई दुनिया ने एक और विशेष 'कहीं खुशी-कहीं गम' से दिग्गजों के हार जीत का विश्लेषण और जिक्र किया है...पत्र लिखता है कि 'नरेंद्र मोदी की सुनामी में कांग्रेस समेत तमाम राज्यों के क्षत्रप ही नहीं उड़े,जातीय और सामाजिक समीकरण के किले भी ध्वस्त हो गए। बसपा, द्रमुक, और रालोद जैसे दल तो अपना खाता तक नहीं खोल सके। जैसे नतीजे आए उसके लिए सिर्फ तीन शब्द हैं। अद्भुत...! अविश्वसनीय ...! अकल्पनीय !

नई दुनिया अपने विचार विशेष पृष्ठ पर प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के पूर्व सलाहकार और वरिष्ठ पत्रकार हरीश खरे का आलेख प्रकाशित किया है...हरीश खरे ने इसे भाजपा से ज्यादा मोदी की जीत माना है। हरीश खरे अपने आलेख में लिखते हैं कि □ नरेंद्र मोदी के अभियान ने युवाओं और खासकर पहली बार वोट डालने वाले मतदाताओं में अपनी महत्वाकांक्षाओं और अभिलाषाओं को मूर्तमान करने की आशा का संचार किया। इस जनादेश से तो यह साफ है कि युवा मतदाताओं ने जातिवद्द की राजनीति से ऊपर उठते हुए मोदी की पार्टी को वोट दिया है □

इसी पृष्ठ पर वरिष्ठ पत्रकार नीरजा चौधरी का भी एक आलेख प्रकाशित हुआ है..बड़ा जनादेश बड़ी जिम्मेदारी शीर्षक से नीरजा लिखती हैं कि 2014 के जनादेश ने मोदी को अपने किए गए वादों को अमल में लाने के लिए फ्री हैंड दे दिया है । अब वे अपने मनमाफिक टीम चुन सकते हैं। उन्होंने लोगों में बड़ी-बड़ी उम्मीदें जगाई हैं तो अब उन्हें कुछ करके भी दिखाना होगा। एक और वरिष्ठ पत्रकार परंजॉय गुहा ठाकुरता □ अब देश की उम्मीदें पूरी करने की चुनौती 'शीर्षक से लिखते हैं कि □ भाजपा के पक्ष में वोटों ने अभूतपूर्व रूझान दिखाया है। 1984 के बाद पहली बार किसी पार्टी को लोकसभा में बहुमत मिला है। पिछली बार किसी गैर कांग्रेसी पार्टी ने 1977 में बहुमत पाया था।

अब बात एक और प्रमुख समाचार पत्र दैनिक भास्कर की...पत्र ने अपने पहले पृष्ठ पर नमो भारत शीर्षक से मोदी की एक बड़ी तस्वीर प्रकाशित की है ..पत्र अपने पहले और विशेष पेज पर लिखता है कि कांग्रेस हारी ,हारी, और हारती चली गई...पत्र ने लिखा है कि मुस्सलि भी मोदी के साथ ! मुस्लिम प्रभाव वाली 92 सीटों में से मोदी तो मिली 41...साथ ही इस पत्र ने एक तरफ राज्यों में मिली पार्टियों के सीटों का जिक्र किया है..एंकर में कल्पेश याज्ञनिक ने एक अलग तरह के संपादकीय लिखा है..प्रश्न और उत्तर के माध्यम से इस संपादकीय में लिखा है कि पहाड़ तो हिला दिया, अब उसे कंधों पर लेकर चलना है ! अपने खास अभिव्यक्ति पेज पर समाचार पत्रों ने छह विशेषज्ञों के अलग-अलग आलेख -विचार प्रकाशित किए हैं....नरेंद्र मोदी के बाँयोग्राफर नीलांजन मुखोपाध्याय ने नई पीठी पर चलाया इनोवेशन का जादू...शीर्षक से लिखा है कि '



ओबामा के अब केस स्टडी बनना चाहिए । इस अभियान में उन्होंने कोई गलती नहीं की ...तब भी नहीं जब केजरीवाल उन्हें चुनौती देते नजर आए । वहीं राहुल गांधी की बाँयोग्राफर आरती रामचंद्रन ज़्यादा बड़ा सवाल , कांग्रेस का क्या होगा ? शीर्षक से लिखती हैं कि इस हार से कांग्रेस नेतृत्व पर सवाल उठेंगे पर वह तत्काल नहीं होगा । हालांकि इतिहास बताता है कि किसी भी नतीजे का गांधी परिवार के प्रभाव पर कोई असर नहीं पड़ता । इसलिए सिर्फ सवाल उठकर रह जाएंगे ।

वरिष्ठ पत्रकार और भारतीय विदेश नीति परिषद के अध्यक्ष वेद प्रताप वैदिक जनता के गुस्से ने नहीं, ठंडी समझ ने राजनीति हदल दी शीर्षक से लिखा है कि देश के मतदाताओं को लगा कि वह ठगा गया है। उसने अपना देश अ नेताओं को थमा दिया है..कांग्रेस को अपने अनकिए का फल तो भुगतना ही था।

इसी प:ष्ठ पर सीएसडीएस के डायरेक्टर संजय कुमार का भी आलेख प्रकाशित हुआ है। युवाओं व दलितों के वोट ने दिलाई जीत शीर्षक से संजय लिखते हैं कि हाल तक भाजपा को शडरी वर्ग की पार्टी मानी जाती थी लेकिन इस चुनाव में वह उन तबकों में सेंध लगाने में कामयाब रही जो अब तक कांग्रेस या क्षेत्रीय दलों को वोट देते थे ।

दैनिक भास्कर ने बेहतर कवरेज करते हुए एक पृष्ठ पर किस वर्ग ने कैसे दिया वोट का पूरा विवरण छापा है..पत्र ने लिखा है कि बीजेपी ने नीच राजनीति का ऐसा ढिंढोरा पीटा कि 43 में से 31 सीटे जीत ली साथ ही इस पृष्ठ पर हर वर्ग का दलित, आदिवाली, पिछड़ा वर्ग के वोटों का भी जिक्र किया है। अन्दर के पृष्ठों पर पत्र ने मोदी को कैसे मिली इतनी बड़ी जीत , सोशल मीडिया ने कैसे देखा प्रकाशित किया है जो वाकई काबिले तारीफ है



इस आंधी को समझिए शीर्षक से **राष्ट्रीय सहारा** लिखता है कि

नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा को अविस्मरणीय सफलता मिली है। इस चुनाव में मोदी जनाकांक्षाओं के प्रतीक बन कर उभरे। फलतः देशभर में मोदी की लहर चली और कश्मीर से कन्याकुमारी तक भाजपा का 'कमल' खिल गया। इस जनादेश से मोदी के पक्ष में कई कीर्तिमान स्वतः जुड़ गए हैं। आजादी के बाद उनके नेतृत्व में पहली बार बहुमत की कोई गैर-कांग्रेसी सरकार बन रही है। 1971 में इंदिरा गांधी के नाम पर उनकी पार्टी को यादगार सफलता मिली थी तो 2014 में मोदी के नाम पर भाजपा को देश के उन हिस्सों में भी सफलता मिली है, जहां उसका पहले खाता तक नहीं खुला था। यह अभिभूत करने वाला जनादेश है। जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी के बाद मोदी तीसरे ऐसे बड़े नेता बन गए हैं, जिनके नाम पर पूरे देश ने भाजपा को वोट दिया है। 25 दलों के साथ चुनावी गठबंधन कर मोदी ने गठबंधन राजनीति के पुरोधे रहे अटल बिहारी वाजपेयी से भी बड़ी लकीर खींची है। इस प्रचंड जनादेश के परिप्रेक्ष्य में उन्होंने न केवल अपने ऊपर लगने वाले आरोपों को धो दिया बल्कि इस तरह की राजनीति करने वालों की बोलती भी बंद कर दी है। उन्होंने न केवल सीटों का जखीरा लगाया है बल्कि वोट प्रतिशत में भी बढ़ोतरी की है। इससे उनकी यह सफलता भारतीय राजनीति के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में दर्ज हो गई है। अब मोदी को कसौटी पर खरे उतरने की मोदी की बारी है। देश को उनके नेतृत्व में नए किस्म की राजनीति की शुरुआत का इंतजार है।

आ गयी मोदी सरकार शीर्षक से राष्ट्रीय सहारा अपने संपादकीय में लिखता है कि 'समर्थक इसे 'लहर' बता रहे थे जबकि विरोधियों की नजर में यह महज ख्याली पुलाव से अधिक कुछ नहीं था, लेकिन जब नतीजे आए तो पूरा देश नरेंद्र मोदी की 'सुनामी' में बहता दिखा। चुनाव पूर्व सर्वेक्षणों और तमाम एक्जिट पोल संभावनाओं को पीछे छोड़ते हुए इस आम चुनाव ने भाजपा और उसके एनडीए गठबंधन को सातवें आसमान तक पहुंचा दिया है। मोदी के विकास मंत्र ने भाजपा को केवल दिल्ली की सत्ता ही नहीं सौंपी है बल्कि डेढ़ दशकों से पार्टी के खिसकते जनाधार में नव प्राण फूंक दिए हैं। भाजपा का सबसे ठोस जनाधार वर्ष 1998 में 9.43 करोड़ वोटों के समर्थन पर बना था जो बाद में फिसलता चला गया और अगले ग्यारह वर्षों में सत्रह फीसद की कटौती के साथ यह 7.84 करोड़ मतदाताओं तक सिमट गया। जाहिर था कि इस अवधि में तैयार नए वोटों की फौज भी भाजपा से कटी चल रही थी। वर्ष 2009 में मनमोहन सिंह सरकार की दूसरी पारी शुरू होने के बाद भाजपा के सामने फिसले जनाधार की वापसी और नए मतदाताओं को समेटने की यही दोहरी लेकिन दुरूह चुनौती थी। नरेंद्र मोदी को चेहरा बना कर भाजपा इस चुनौती को साधने में कितनी सफल रही इसका अंदाज आम चुनाव में पार्टी को मिले करीब सोलह करोड़ मतदाताओं का समर्थन और साढ़े बत्तीस फीसद वोट हिस्सेदारी से मिल जाता है। इस आम चुनाव में जाति, क्षेत्रीयता और वगैरे की सीमाएं जैसी ध्वस्त हुई हैं उसकी पुष्टि उत्तर प्रदेश और बिहार से हो रही है जहां क्षेत्रीय पार्टियों का अस्तित्व खतरे में नजर



आने लगा है।

मोदी का चमत्कार शीर्षक से अपने दूसरे संपादकीय में पत्र लिखता है कि दिल्ली की राजनीति पर काबिज भाजपा के अन्य वरिष्ठ नेताओं ने भी कभी खुले मन से उनका स्वागत नहीं किया। कदम-कदम पर हुए इस विरोध और अपमान ने ही उन्हें पहले भाजपा कार्यकर्ताओं और फिर देश की जनता का दुलारा बना दिया। खुद मोदी भी हरेक चुनौती को अवसर में तब्दील करते रहे और इन चुनौतियों ने लगातार उन्हें और मजबूत बनाया। प्रधानमंत्री पद का दावेदार घोषित होने के बाद उन्होंने जिस सुगठित और सुनियोजित ढंग से अपना प्रचार अभियान चलाया, वह देश की राजनीति के लिए अनोखा था। उन्होंने कश्मीर से कन्याकुमारी तक तूफानी दौरे किए और देश को मथ डाला। महंगाई, भ्रष्टाचार और बेरोजगारी से त्रस्त जनता को मोदी ने बखूबी यकीन दिलाया कि उनके पास तमाम इलाज मौजूद हैं। इस चुनाव को उन्होंने एक तरह से खुद पर हो रहे जनमत संग्रह के रूप में तब्दील कर दिया और जनता को समझाया कि बहुमत के बगैर देश को पटरी पर लाना संभव नहीं है। नतीजे गवाह हैं कि जनता ने न केवल उनके वादों पर यकीन किया, बल्कि उन्हें रिकॉर्ड बहुमत दे दिया। मोदी का इस तरह नायक के रूप में उभरना वास्तव में भारतीय जनतंत्र की जीत है।



हिंदी का हाल ही में शुरू हुआ अखबार नवोदय टाइम्स ने पहले पेज को रोचक बनाते हुए नरेन्द्र मोदी और मनमोहन सिंह की तस्वीरों को लेकर एक ही फ्रंट पेज पर अनूठा प्रयोग किया है, जिसमें मनमोहन सिंह की खबर की हेडिंग बनाई है- कांग्रेस का '0000 निशान' नहीं। पाठक इसका अर्थ भली भांति लगा सकते हैं, वहीं दूसरी खबर जो नरेन्द्र मोदी की है उसे उलटकर पढ़ा जाए कि सॉलिड सरकार, वो भी मोदी की जोरदार तस्वीर के साथ।

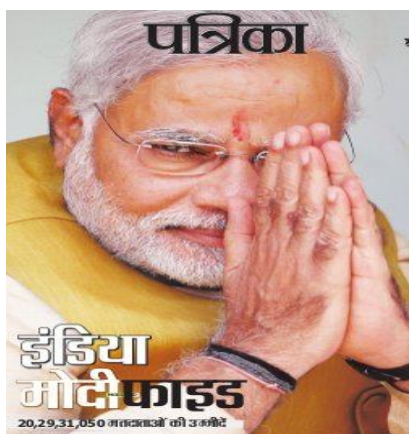
हिंदी के अखबारों में ऐसा प्रयोग कम ही देखने को मिलता है। लेकिन नवोदय टाइम्स ने हर खबर की हेडिंग को अन्य अखबारों से अलग करके प्रयोगात्मक कार्य किया है। अखबार ने अपने संपादकीय का शीर्षक भी कुछ इस तरह से लिखा है, मोदी राज की शुरुआत और 'फैमिलीराज' की समाप्ति। अखबार ने अपने संपादकीय में लिखा है कि इन चुनावों में भाजपा की इस अप्रत्याशित सफलता का श्रेय चाहे कोई भी ले परंतु इसका वास्तविक श्रेय एंटी इनकम्बेंसी, विकास के लिए जन आकांक्षाओं तथा मोदी लहर को दिया जाएगा।

एक और नया समाचार पत्र **नया इंडिया** ने अपने मास्क हेड के ऊपर ही एक विशेष आलेख लिखा है...जिसका शीर्षक है □ वाह वाडडह ..जनता ने बदला भारत । इसमें पत्र लिखता है कि ये जनादेश न हो भूकंप हो...जनादेश ने भारत के राजनीतिक भूगोल को बदल दिया है ...कांग्रेस का हिमालय ढहा,,। सपा, बसपा,राजद,जेडीयू,जेवीएम,एनसीपीआदि के विंध्य अरावली ,शिवालिक निलगिरी जैसे तमाम पहाड़चूरा हो गए।पूरा मैदान सपाट हुआ और उभरा अकेला नरेंद्र मोदीके नाम का एक उत्तंग एवरेस्ट शिखर। पत्र ने अपने पहले पेज पर आ गई मोदी सरकार ! नाम से खबर प्रकाशित की है...एकर स्टोरी में पत्र ने एक और विशेष आलेख लिखा है -आजादी का यह तीसरा सोपान !संपादक हरिशंकर व्यास लिखते हैं कि□ नरेंद्र मोदी का मतलब वह दर्शन है, वह आह्वान है, जिसे विवेकानंद ने सोचा,आरएसएस ने प्रतिपादित किया। तभी आज से अब दिन-प्रतिदिन हमें यह देखना है,बूझना है कि बतौर प्रचारक जिस नरेंद्र मोदी ने 44 साल भारत चिंतन में गुजारे वह राष्ट्र नियंता बनने के बाद भारत को बना पाता है या नहीं ?



अब बात दिल्ली से प्रकाशित समाचार पत्र हिंदुस्तान की ...पत्र ने मोदी की महाविजय शीर्षक के साथ मोदी की एक तस्वीर प्रकाशित की है...साथ ही पत्र लिखता है कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा को मिली इस ऐतिहासिक और अविश्वसनीय सी लगनी वाली जीत के पीछे देश की जनता, खासकर युवा वर्ग की अपेक्षाओं का पहाड़ भी खड़ा है। आजाद भारत के इतिहास में पहली बार देश ने सीधे अपना प्रधानमंत्री चुना है। वह भी अप्रत्याशित और अभूतपूर्व जनादेश के साथ...जनादेश ऐसा कि देश की सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस को लोकसभा में मुख्य विपक्षी दल होने के लायक भी नहीं रखा।

अपने एंकर स्टोरी में हिंदुस्तान के संपादक शशि शेखरा नरेंद्र मोदी के नए अवतार ने तोड़े तमाम सियासी मिथका लिखते हैं कि जनादेश - 2014 आक्रोश और आशा के मिलाप से जनमा वह तत्व है जो देश की दशा और दिशा बदल सकता है। नरेंद्र मोदी की चुनौतियां यहीं से शुरू होती हैं। पत्र आगे लिखता है कि '30 बरस में भाजपा का ऐसा उभार और कांग्रेस की ऐसी अभूतपूर्व गिरावट क्या कहती है? यही ना कि जो कहो उसे पूरा करो...मतदाता न भूलता है और ना माफ करता है।



एक और प्रमुख समाचार पत्र है राजस्थान पत्रिका ..अपने पहले और विशेष पृष्ठ पर मोदी की तस्वीर के साथ सिर्फ इतना लिखा है कि -इंडिया मोदीफाइंड. पत्र अपने 'देश को सलाम' संपादकीय में गुलाब कोठारी लिखते हैं कि सबसे पहले देश की हर जाति के हर युवा-युवती को हार्दिक बधाई। सबने जाति, धर्म, क्षेत्र के बन्धनों के पार जाकर देश की सत्ता एक मजबूत नेता के हाथ सौंप दी है। राजस्थान पत्रिका ने माना है कि श्रीमती इंदिरा गांधी के बाद देश को मजबूत इरादों वाला

नेतृत्व मिला है। पिछले वर्षों में देश की जे दुर्गति हुई है..महंगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी ने देशवासियों को जिस त्रस्त कर दिया था ..उस परिस्थिति का अब अंत आ गया लगता है। अपने विशेष पेज स्पॉट लाइट में आखिर क्यों हुआ बदलाव शीर्षक से तमाम राजनीतिक दलों के नेताओं की प्रतिक्रिया को प्रकाशित किया है ...पत्र लिखता है कि यह राजनीतिक बहस का विषय हो सकता है कि सोलहवीं लोकसभा में बीजेपी जीती या नरेंद्र मोदी, लेकिन यह सच है कि 1984 के बाद पहली बार किसी एक दल को स्पष्ट बहुमत मिल रहा है। यह भी एक तथ्य है कि इससे पहले कांग्रेस की ऐसी पराजय कभी नहीं हुई।

अपने पहले पृष्ठ पर दैनिक जागरण ने शीर्षक प्रकाशित किया हैअब मोदी सरकार

दैनिक जागरण
 शिव का सारथिक पत्र जाने वाला असवार

पार्टी	भाजपा	कांग्रेस	समजवादी	जनतादल	आप	तेलुगु दल	अन्य	रिजर्व
2009	186 (18.3%)	286 (28.3%)	19 (1.9%)	11 (1.1%)	04 (0.4%)	78 (7.8%)	20 (2.0%)	84 (8.4%)
2014	282 (32.3%)	44 (2.0%)	34 (4.0%)	37 (3.9%)	04 (2.2%)	85 (9.5%)	82 (1.1%)	84 (10.7%)

अब मोदी सरकार

उम्मीदों और अपेक्षाओं के पहाड़ से जूझने की चुनौती

रिकार्ड जीत

जानकारी के लिए... 2014 के चुनाव में भाजपा ने 32.3% वोट जीते, जो 2009 के 18.3% से एक रिकार्ड है।

नरेंद्र मोदी ने 31.5% वोट जीते, जो 2009 के 18.3% से एक रिकार्ड है।

कांग्रेस ने 2.0% वोट जीते, जो 2009 के 28.3% से एक रिकार्ड है।

समजवादी दल ने 4.0% वोट जीते, जो 2009 के 1.9% से एक रिकार्ड है।

जनता दल (एन) ने 3.9% वोट जीते, जो 2009 के 1.1% से एक रिकार्ड है।

आप ने 2.2% वोट जीते, जो 2009 के 0.4% से एक रिकार्ड है।

तेलुगु दल ने 9.5% वोट जीते, जो 2009 के 7.8% से एक रिकार्ड है।

अन्य पार्टियां ने 1.1% वोट जीते, जो 2009 के 2.0% से एक रिकार्ड है।

रिजर्व सीटों पर भाजपा ने 10.7% वोट जीते, जो 2009 के 8.4% से एक रिकार्ड है।

दैनिक जागरण 'जनता का जवाब' शीर्षक से अपने संपादकीय में लिखता है कि अपने राजनीतिक विरोधियों में से अधिकांश की ओर से लांछित और यहां तक कि कई बार अपमानित किए जाने के साथ-साथ देश-विदेश के कथित बुद्धिजीवियों की एक टोली की ओर से एक खतरनाक शख्स के तौर पर देखे जाने वाले नरेंद्र मोदी ने प्रचंड जीत हासिल कर सबको जवाब दे दिया है। वस्तुतः मोदी के पक्ष में उनके विरोधियों को यह करारा जवाब आम जनता की ओर से दिया गया है। इसी के साथ उन्होंने खुद को सबसे लोकप्रिय, भरोसेमंद और अच्छे दिन की उम्मीद जगाने वाले नेता के रूप में भी स्थापित कर लिया है। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा जिस तरह अकेले दम बहुमत के आंकड़े को पार कर गई और इस कामयाबी ने जिस प्रकार अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में हासिल की गई जीत को भी पीछे छोड़ दिया उससे मोदी नायक से महानायक की श्रेणी में प्रवेश करते दिख रहे हैं।



परिष्कार करने की
मेरी जो परावृत्ति है,
उस पर देश में किसी को
शक है क्या? हम तो मजदूर
नंबर वन हैं, आने वाले 60
सालों में देश को मेरे जैसा
मजदूर नहीं मिलेगा।
मेरे चुनाव अभियान में
मजदूर कैसा होता है,
ये उदाहरण प्रस्तुत
कर दिया।

बमो बमः



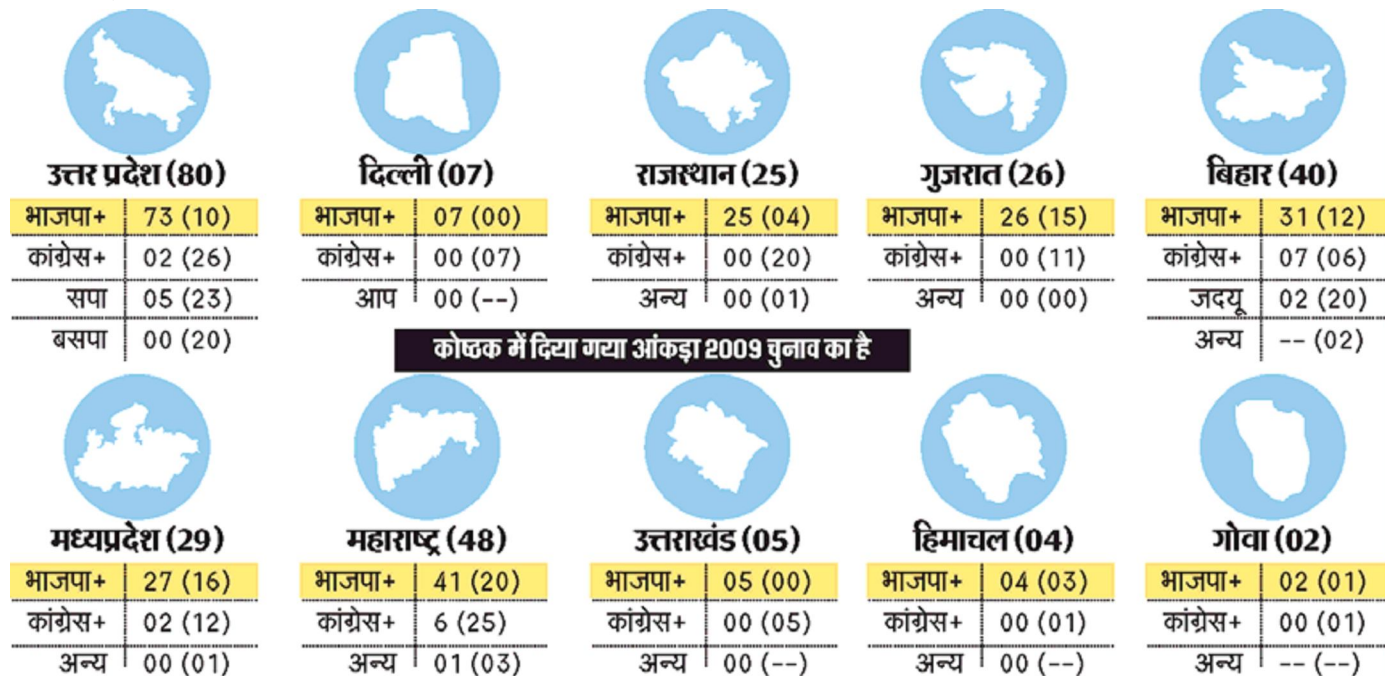
अहित हैं।

होते हैं। पिछले 13 साल से मोदी का यही

नीति का

टूट गए सारे मिथक नाम से एक विशेष आलेख में विश्लेषक प्रशांत मिश्र लिखते हैं कि ' मोदी के पक्ष में जनसमर्थन के जनसैलाब को देखकर देखते-देखते भाजपा को सहयोग करने वाले दलों की कतार लग गई। इनेलो और मनसे जैसे उदाहरण भी सामने आए, जहां एनडीए के बाहर की पार्टियां भी मोदी के नाम पर ही वोट मांगती दिखीं। तो दूसरी तरफ मोदी के नेतृत्व ने अगड़ी जाति के कथित घेरे से निकालकर भाजपा को ऐसी पार्टी बना दिया जिसके साथ भारत का पूरा परिवेश दिखाई दे। सवा अरब की आबादी और 80 करोड़ मतदाताओं के बीच हर वर्ग मोदी के साथ खड़ा दिखाई दे रहा है। 1 मोदी को मिले इसी जनसमर्थन ने उनके सात रेसकोर्स पहुंचने के रास्ते के रोड़ों को किनारे कर दिया। यह बात ध्यान देने की है कि 16वीं लोकसभा

के इस चुनाव में शायद पहली बार हुआ है कि सरकारी दल और गैर एनडीए दलों ने पूरा चुनाव ही एक विपक्षी नेता के विरोध पर लड़ा है। "



अमर उजाला ने अपने पहले पृष्ठ पर महानायक नमो नमो हिंदुस्तान नाम से खबर प्रकाशित की है .पत्र लिखता है - 'कश्मीर से कन्याकुमारी और गुजरात से असम तक नरेंद्र मोदी की ऐसी जबरदस्त आंधी चली कि कांग्रेस ही नहीं, बल्कि बसपा, सपा, जदयू समेत कई क्षेत्रीय दल उसमें उड़ गए। कई क्षेत्रीय दलों का सूपड़ा साफ हो गया तो कई हाशिए पर पहुंच गए। एग्जिट पोल के अनुमानों को पीछे छोड़ भाजपा ने अपने 'मिशन 272 प्लस' को पार करते हुए अकेले ही पूर्ण बहुमत पा लिया। संपादक यशवंत व्यास **मनोरंजन खत्म, ज्ञानरंजन शुरू** शीर्षक से लिखते हैं कि 'स्पष्ट जनमत का मोदी' - एक सच है। असफल राहुल गांधी भी सच है। नई राजनीति सच है। नया समय सच है। कुछ संभावनाएं हैं जिन पर बात होगी। पहला, देश के आर्थिक प्रशासन में निर्णायक बदलाव आ सकता है। दूसरा, एशिया की राजनीतिक-सामाजिक-सांस्कृतिक ताकतों के अंतर्संबंधों पर गहरा काम हो सकता है। राजनीतिक प्रशासन में विषय विशेषज्ञों की सार्थक एंट्री हो सकती है। कसावट के [पूरब-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण] राजनीतिक फॉर्मूले पर काम हो सकता है। सांप्रदायिक वोट बैंक की राजनीति और दंगों-विस्फोटों के करंसीकरण का रूप बदल सकता है। यह कठिन है, लेकिन जैसे वी.पी. सिंह के मंडल ने [दलित-मुस्लिम] नतीजों से कांग्रेस की तीलियां बिखेर दी थीं, वैसे विकास और सामूहिक भागीदारी के प्रति ईमानदारी से कई अंतर्विरोधों को खत्म करने की दिशा में पहल हो सकती है। अहंकार से दूर सुदृढ़ नेतृत्व की इच्छा से युवाओं ने एक चेहरे पर विश्वास किया है। उस चेहरे की पार्टी, उसके नेतृत्व की शक्ति को, विशाल भारतीय गरिमा में तब्दील कर सके तो मध्य-वाम और मध्य-दक्षिण की स्पष्ट रेखाएं उभर सकती हैं। यह जनतंत्र के लिए शुभ होगा।

कुल मिलाकर कहा जाए तो हर समाचार पत्र ने नरेंद्र मोदी की जीत को भारी -भरकम कवरेज दिया ...सभी पत्रों में एक बात खासतौर पर देखने को मिली..वह यह कि सभी पेजों ने दो -जदो मुख्य पृष्ठ प्रकाशित किए ...और सभी समाचार पत्रों ने अपने अपने संपादकीय लेख लिखे ,,और मोदी और लोकतंत्र का महिमामंडन किया ।